

हृदय कांत दीवान

शिक्षा एवं पर्यावरण

पर्यावरण के शिक्षा में उपयोग और शिक्षा के साथ पर्यावरण के संबंधों के कई आयाम हैं। इस संबंध को जांचने और समझने के लिए इन्हें मोटे–तौर पर तीन पहलुओं से देखा जा सकता है। ये पहलू इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये इस बात के द्योतक हैं कि स्कूलों में बच्चे किस प्रकार भिन्न–भिन्न उद्देश्यों से पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया कर सकते हैं। आम संवाद में इन पहलुओं के बारे में स्पष्टता नहीं होने के कारण, विचारों में भी असंगति पायी जाती है।

पर्यावरण सीखने का संसाधन

प्रथम पहलू जो है, उसमें पर्यावरण एक सीखने का संसाधन है। इसका अर्थ है कि बच्चों को कक्षा में सक्रिय रूप से जोड़ने के लिए सीखने–सिखाने की सामग्री पर्यावरण से उपलब्ध करवाना। इसका यह मतलब भी हो सकता है कि पठन प्रक्रिया में बच्चे के अनुभवों को भी सम्मिलित करना, ताकि इन सभी का उपयोग उसके लिए अवधारणाओं की संरचना में सहायक हो। यानीकि बच्चे अपने पर्यावरण से जुड़ी वस्तुओं, घटनाओं और तथ्यों का विवरण लिखने की क्षमता को पैना कर सकें या पर्यावरण में पायी जानेवाली वस्तुओं या सामग्री का उपयोग, उनके लिए गणित के परिचय का माध्यम बन सके। जीवन की वास्तविक परिस्थितियों का उपयोग, बच्चों की गणित के अमूर्त सिद्धान्तों को सीखने की क्षमता को बढ़ा सकें। एक प्रकार से, इसका तात्पर्य यह है कि पर्यावरण का उपयोग ऐसी जगह के रूप में हो, जहां ठोस नमूनों के सृजन द्वारा उन सिद्धान्तों का प्रस्तुतीकरण हो सके, जिसका अन्यथा प्रत्यक्षीकरण नहीं हो सकता। भाषा सीखने के साथ–साथ पर्यावरण की किसी विशिष्ट परिस्थिति के विवरण में, ऐसी जगह पर संगीत सुनने के अनुभव में मेल हो, तो यह सम्बद्धता को बढ़ाने में और अवधारणाओं के अर्जन में सहायक है। यह कई विषयों के केन्द्रीय तत्त्वों से जुड़ने के लिए अवसर एवं सामग्री भी उपलब्ध करवाता है।

पर्यावरणीय शिक्षा

दूसरा पहलू पर्यावरण की शिक्षा के बारे में है, जिसे पर्यावरणीय शिक्षा कहा जा सकता है। यहां हम बच्चे को पर्यावरणीय मुद्दों से जुड़ी अवधारणाओं और चिंताओं से परिचित कराने की बात कह रहे हैं, जैसे पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण संतुलन इत्यादि। इसमें यह भी देखना सम्मिलित होगा कि मनुष्य

और पर्यावरण एक ही प्राकृतिक व्यवस्था के अन्तर्गत पारस्परिक मेल से रह सके। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चों में चिंताओं और मूल्यों का विकास, तर्कसम्मत विश्लेषण पर आधारित हो, ताकि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग और प्रकृति के अन्य प्राणियों के प्रति उनका व्यवहार इसके अनुरूप हो। घटते पेयजल संसाधनों, बढ़ते वायु प्रदूषण, ओज़ोन छिद्र का फैलाव, ग्लेशियरों के पिघलने, ठोस एवं जैविक अपशिष्ट की समस्याओं, मौसम के बदलते मिज़ाजों और रेडियोएक्टिविटी के बढ़ने आदि के कारण, इस पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है। विभिन्न प्रजातियों का लुप्त होना और पृथ्वी पर उनके जीवित रहने के लिए स्थान का सिमटना भी इसमें शामिल है। इसका एक प्रयोजन, यह भी प्रतीत होता है कि बच्चों को कुछ नियम देना जिनका उन्हें पालन करना या नहीं करना चाहिए। दूसरा प्रयोजन, यह है कि बच्चों में प्रकृति और पर्यावरण के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना जागृत करना और प्रकृति के साथ मानवीय संबंधों के प्रति जागरूकता का विकास करना।

पर्यावरणीय अध्ययन

तीसरा पहलू वह है, जिसे हम प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन कहते हैं। उच्च प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में, इसे विविध सामाजिक अध्ययन और प्राकृतिक विज्ञान विषयों के रूप में पढ़ाया जा रहा है। हालांकि उच्च प्राथमिक स्तर पर इसको विभिन्न तत्त्वों से बने दो व्यापक सेटों में पढ़ाया जा रहा है। विषयों के इन दो सेटों में कौन से तत्त्व सम्मिलित हैं, की विस्तृत जानकारी महत्त्वपूर्ण है। किन्तु फिलहाल हम इन व्यापक श्रेणियों तक ही सीमित रहेंगे। प्रारम्भिक स्तर के पर्यावरण अध्ययन से, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जिस पर्यावरण की हम बात कर रहे हैं, वह केवल प्राकृतिक और भौतिक वातावरण ही नहीं है, अपितु सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक वातावरण भी है। हमें यह समझना होगा कि पर्यावरण अध्ययन का अभिप्राय, पर्यावरण के अध्ययन और अन्वेषण से है। इसका प्रयोजन यह है कि पर्यावरण की पद्धतियों, नियम, कार्य पद्धतियों और उनके आपसी संबंधों को खोजना। इसका अभिप्राय है कि पर्यावरण को खोजने के साथ–साथ उसका अवलोकन, विश्लेषण और समीक्षा करना सीखना।

प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन पढ़ाना

प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम, स्पष्ट रूप से दो भिन्न पहलू दर्शाता है। एक पहलू है, इसमें सम्मिलित की गयी विषय सामग्री का विकास और दूसरा पहलू है, पर्यावरण के अध्ययन की धारणा का विकास। इस सीखने के संदर्भ को बाद में अन्य क्षेत्रों और अन्य विषयों तक विस्तारित किया जा सकता है। यदि इस कोर्स का उद्देश्य, मात्र सूचनाओं का अधिग्रहण न होकर बल्कि पर्यावरण का अध्ययन करना है, तो बच्चों को पर्यावरण के साथ जुड़े रहने के संदर्भ में जो कार्य दिए जाते हैं, वे विशिष्ट प्रकार के होने चाहिये।

हमें इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों से हम अधिकांशतः जो चर्चा और काम करवाना चाहते हैं, वे आगे उनके अनुभवों से उत्पन्न हो या कुछ ऐसा हो जिसकी वे बाद में भी अपने अनुभवों से तुलना कर सकें। इसलिए यह स्पष्ट है कि, जब हम प्राथमिक विद्यालयों के लिए पर्यावरण अध्ययन पर विचार करते हैं, तो व्यापक रूप से हम एक ऐसे क्षेत्र के बारे में बात करते हैं, जिससे बच्चा पहले से ही परिचित है और अंतःक्रिया कर रहा होता है। इसमें, अधिकांश के बारे में बच्चा सजग होता है और अक्सर उसके स्वयं के अनुभवों की गहराई, किसी शिक्षक या पाठ्यपुस्तक लेखक से ज़्यादा होती है। इसमें कोई शक नहीं कि कोई बच्चा, जो स्कूल आता है और कक्षा तीन तक पहुंच गया है, उसको दुनिया का काफ़ी एक्सपोज़र है और उसमें अपनी संस्कृति, भाषा, इतिहास और परम्पराओं के बारे में जागरूकता होती है। उसने स्वाभाविक मानदंड और नियम भी सीखे होते हैं और समाज में प्रचलित मूल्यों को भी ग्रहण किया होता है।

प्राकृतिक घटनाओं और तथ्यों के बारे में, उसके अपने विचार होते हैं और अपने आसपास की सारी चीज़ों की समझ होती है, वह अपने हिसाब से इसका विश्लेषण करता है। वह जिस भी सामग्री के सम्पर्क में आता है, उसके बारे में विकल्प बनाता है, निडरता से अनुमान लगाता है, मौक़ों का उपयोग करते हुए प्रयोग करता है। वह पौधों और पशुओं के बारे में जानता है और अक्सर उनके व्यवहार के बारे में उसके पास रोचक अंतर्दृष्टि हो सकती है।

एक स्वाभाविक प्रश्न, जो दिमाग़ में उठता है कि क्या बच्चा

वास्तव में ये सब जानता है। यद्यपि बच्चा अपने वातावरण के बारे में इतना सजग है, तब पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम का क्या प्रयोजन है। बच्चा वैसे भी वयस्कों के साथ बड़ा होता है, जिनका ज्ञान और अनुभव उससे ज़्यादा व्यापक है और जितनी मदद हम स्कूलों में कर सकेंगे, उससे ज़्यादा सहायता वे बच्चों के अनुभवों को सुदृढ़ करने में, उनके एक्सपोज़र को व्यापक बनाने में और उनके विश्लेषण को पैना करने में करेंगे। यदि बच्चे को उसके पर्यावरण के संदर्भ में अपने जीवन से सम्बन्धित अपनी क्षमताओं को विकसित करना है, तो इसमें विद्यालय, अध्यापक और पाठ्यपुस्तक क्या भूमिका अदा कर सकते हैं?

इसके बारे में काम ज़्यादा आगे नहीं बढ़ा है, क्योंकि बच्चे के सन्दर्भ और अनुभवों से अमूर्त धारणाओं को निकाल पाना कठिन है। विद्या भवन और ऐसी कुछ संस्थाएं, इसको सम्भव कर पाने के लिए जूझ रही हैं, इनके अलावा इस दिशा में बहुत कम प्रयास हुए हैं।

हालांकि बच्चे के वातावरण को कक्षा में लाने का विचार काफ़ी महत्त्वपूर्ण रहा है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 ने भी इस बारे में चर्चा की है और यह विद्या भवन के कई कार्यों और मध्य प्रदेश में होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के प्रयासों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। विद्या भवन में वनशाला का अनुभव ऐसे ही प्रयासों का उदाहरण है, जिसमें बच्चे दूरस्थ स्थानों पर काफ़ी समय व्यतीत करते हैं, वहां के प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के सम्पर्क में रहते हैं और नज़दीक से इसका अध्ययन करते हैं। लेकिन प्रारम्भिक विद्यालयों के लिए जो सामग्री और तरीक़े तैयार किए गए हैं, उनमें शोध का बहुत कम समावेश है।

पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम

पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण में पर्यावरण का समागम केवल बात करने भर से नहीं हो पाएगा। ऐसा करने के लिए पाठ्यपुस्तक लेखकों और पाठ्यक्रम निर्माताओं को देश के बच्चों, शिक्षकों और आम विद्यालयों से जुड़ना होगा और अंतःक्रिया करनी होगा। पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों के संदर्भ में विचारों को उनके साथ मिलकर खोजना, समझना और विकसित करना होगा। शिक्षकों को एक तैयार पाठ्यक्रम और एक राष्ट्रीय पुस्तक दे देना, जिसे वे अपने क्षेत्र के अनुकूल अपनाकर काम में लें, इतना ही पर्याप्त न होगा। यह सहभागिता का दायरा बहुत सीमित है और पुस्तक या पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया विलम्ब से होती है और इसमें पाठ्यक्रम निर्माताओं और शिक्षकों के बीच कोई अंतःक्रिया शामिल नहीं है। और इस अंतर्क्रिया के अभाव में, यह थोपा हुआ एवं अपरिभाषित बना रहेगा।

पाठ्यक्रम के सार्थक क्रियान्वयन के लिए यह आवश्यक है कि बच्चा कक्षा की प्रक्रियाओं में सक्रिय सहभागी बने, न कि एक निष्क्रिय श्रोता। वह अवलोकन करे और अपने सहपाठियों एवं शिक्षक के साथ मिलकर, अवलोकनों से निष्कर्ष निकाल पाए, न कि पहले से ही, तथ्यों के रूप में दिए गए परिणामों की मात्र पुष्टि करे।

कक्षा–कक्षा में पर्यावरण अध्ययन की गतिविधियां

कक्षा में की जानेवाली गतिविधियां और उपलब्ध सामग्री, पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा से सम्बद्ध होने के साथ बच्चों के संदर्भ में करने योग्य होनी चाहिए। उदाहरण के तौर पर, यदि एक गतिविधि में किसी ऊर्जा देनेवाले स्रोत का उपयोग करने की आवश्यकता हो, तो यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि उपलब्ध ऊर्जा का स्रोत या तो स्टोव या चिमनी होगा, जो दोनों ही गर्म होने पर सामान्यतया इस्तेमाल किये जानेवाले पात्र की बाहरी सतह पर कालापन ला देते हैं। यदि हम अध्ययन के लिए बच्चों से फूल और पत्तियां मंगवाना चाहते हैं, तो सारे फूल–पत्ती सभी जगह पर उपलब्ध नहीं होते, तो उदाहरण ऐसे चुने जाने चाहिए, जो व्यापक तौर पर उपलब्ध क़िस्में हों। तारों के साथ रात्रि प्रयोग, कितना भी रोचक एवं उपयोगी क्यों न हो, लेकिन ये आम विद्यालयों में औसत रुचि वाले शिक्षकों के साथ नहीं किए जा सकते। जिन प्रयोगों को करने के लिए यांत्रिक कौशल की आवश्यकता होती है, उन्हें ध्यानपूर्वक निगरानी में करना होगा और छात्रों एवं शिक्षक दोनों को ये दक्षताएं, धीरे–धीरे विकसित करनी होंगी। विचार का परिचय और निर्माण ऐसे प्रश्नों से होना चाहिए, जो बच्चे के लिए अर्थपूर्ण हों। इसलिए पर्यावरण के उनके अपने अनुभवों से ही इन

प्रश्नों को निकाला जाना चाहिए। आयतन के विचार का परिचय केवल स्थानीय रूप से प्रयुक्त की जानेवाली इकाइयों और मापन उपकरणों के बारे में, चर्चा के साथ किया जा सकता है। फल, बीज और फूल के बीच के सम्बन्धों के बारे में प्रश्न को गूलर के पेड़ के सटीक उदाहरण के साथ पेश किया जा सकता है। (इस पेड़ के बारे में सामान्य धारणा है कि इस पर फूल नहीं आते) पर्यावरण के उपयोग का विचार, पर्यावरण में उपलब्ध सामग्री के ज्ञान और विद्यालयों में सामग्री के संग्रहण और उसके रखरखाव करने के साथ समाप्त नहीं हो जाता। किन्तु इसमें किट उपलब्ध करवाने की संभावनाएं, बच्चों के अनुभव और उनके द्वारा खेले जाने वाले खेल, मसले जिनमें कि बच्चों और शिक्षकों की रुचि हो, अवधारणात्मक अवरोध, जो विषय की उनकी वर्तमान और भविष्य की समझ को बाधित कर सकता है, शिक्षकों और बच्चों के सामर्थ्य और योग्यता का स्तर साथ ही सामग्रियों में बदलाव करने और विचार प्रदान करने में शिक्षकों और बच्चों की भागीदारी भी शामिल है। इसमें सामग्री की भाषा और इसके प्रस्तुतीकरण का तरीक़ा भी सम्मिलित है। फीडबैक की ऐसी व्यवस्थाओं को भी खड़ा करना आवश्यक होगा जो इसे कर सके।

प्राथमिक विद्यालयों में पर्यावरण अध्ययन का केन्द्रीय बिन्दु, बच्चे की जिज्ञासा को जगाना, उसे बनाए रखना और उसे तीक्ष्ण करना एवं उसके आसपास के वातावरण की खोज करने में उसकी सहायता करना होना चाहिए। इसे बच्चे में आत्मविश्वास की भावना पैदा करनी चाहिए और बच्चे में ऐसी क्षमताएं विकसित करनी चाहिए, जो उसे उसके दिमाग़ में उठनेवाले प्रश्नों की गहराई तक जाने दे। प्राथमिक विद्यालयों में जो सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ की जानी चाहिए, वह है बच्चों की उन दक्षताओं का अभ्यास करवाना, जो पर्यावरण के बहुस्तरीय अन्वेषण के लिए आवश्यक हैं। बच्चों को ऐसी क्षमताएं देनी चाहिए, जिससे वे अपने अवलोकनों को, अलग–अलग कर सके, श्रेणीवार कर सके, व्यवस्थित कर सकें और उससे निष्कर्ष निकाल सकें। उन्हें नये संबंधों को खोजने और बनाने का अभ्यास करवाया जाना चाहिए।

संक्षेप में, बच्चे को ऐसे पर्याप्त साधन उपलब्ध कराने होंगे, जो उसे स्वयं सीखने में सक्षम बना सकें न कि उसको मात्र जानकारी याद करवाकर कुंठित करें। बच्चे को ऐसी गतिविधियों में शामिल करना चाहिए, जो उसे वातावरण के साथ अंतर्क्रिया करने में और उसके बारे में सोचने–विचारने के अवसर प्रदान करे, जिसका कि वह एक हिस्सा है। इसके अन्तर्गत ही पर्यावरण अध्ययन के अन्य पहलू भी गुंथे हुए हैं। संदेश, जो बच्चों के लिए आवश्यक और महत्त्वपूर्ण समझे जाते हैं, उनका परिचय भी हमें बच्चों के पर्यावरण से संबंधित अनुभवों से जोड़ते हुए करना चाहिए, न कि मात्र उपदेशों के ज़रिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि पर्यावरण अध्ययन से जुड़े भाग को, अत्यधिक निर्देशात्मक (ये करो, वो करो, ये नहीं करो, वह नहीं करो) नहीं बनाया जाए और न ही ज़्यादा अमूर्त जैसी धारणाओं से संबंधित कि पृथ्वी, तारे, राष्ट्र, दुनिया आदि। इन सबके अलावा यदि हमें पर्यावरण अध्ययन की कक्षाओं में नए प्रश्नों, नयी गतिविधियों के प्रति खुलापन रखना है और उन्हें बच्चों में ठूंसी जानेवाली बासी जानकारी का पैकेट नहीं बनाना है, तो अन्य समानान्तर प्रयासों की आवश्यकता होगी। कक्षा में उठनेवाले सवालों का उत्तर देने में या उत्तर देने की प्रक्रियाएं शुरू करने में शिक्षक की सहायता के लिए नेटवर्क स्थापित किए जाने चाहिए। इससे एक ही–सी जानकारी को सब पर थोपे जाने के बजाय, विद्यालय विशेष या विशेष बच्चे के विशिष्ट सवाल का जवाब मिलेगा। इससे बच्चे द्वारा पूछे जा सकनेवाले प्रश्नों या जिनके उत्तर की जानकारी उसे होनी चाहिए, ऐसे प्रश्नों से सम्बन्धित जवाबों और स्पष्टीकरण की भरमार से पाठ्यसामग्री को मुक्त रखने में मदद मिलेगी।

दूसरा जो महत्त्वपूर्ण पहलू है, वह यह कि बच्चे के द्वारा वातावरण के संदर्भ में जो कुछ उसने सीखा हो, उसमें से कम से कम कुछ बातों का कार्यान्वयन करने की उसकी क्षमता हो। ऐसा नज़रिया बनाने के लिए, कुछ चीज़ों का पर्याप्त अभ्यास आवश्यक है। उदाहरण के तौर पर बीज बोना, वृक्षों का संरक्षण करना, पानी को व्यर्थ न बहाना, सफ़ाई रखना इत्यादि। इनके अभ्यास के लिए, यह ज़रूरी नहीं है कि बच्चा सोचे–समझे तौर पर, किसी निश्चित पद्धति से काम करने के फ़ायदों को और एक अच्छे नागरिक के दायित्वों को सूचीबद्ध करे। यह हम सभी का अनुभव रहा है कि इस तरह के कथन यांत्रिक होते हैं और हमारे काम करने के तरीक़ों से असंबंधित भी। इसलिए पर्यावरण अध्ययन

में बच्चे को स्वतंत्रता के अवसर मिलने चाहिए, ताकि वह अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति कर सके, अपने साथियों के साथ इन्हें बांट सके और उन सरोकारों का अभ्यास कर सके (बिना समझे भी), जो वर्तमान के संदर्भ में आवश्यक रूप से परिभाषित किए जा सकते हैं। इसकी आवश्यकता नहीं है कि शिक्षकों और उनके विद्यार्थियों पर सूचनाओं से सम्पन्न सामग्री लादी जाए। कक्षा में दी जानेवाली जानकारी की कोई सीमा बांधने की आवश्यकता नहीं है, सिवाय कि वह चर्चा के संदर्भ में हो और शिक्षक एवं विद्यार्थियों के वास्तविक प्रयासों से, समाज में उपलब्ध स्रोतों के दोहन के संदर्भ में हो। ऐसा संभवतः हो सकता है कि पर्यावरण अध्ययन और सर्वेक्षण गतिविधियों को इस तरीक़े से क्रमशः आगे बढ़ाया जाए कि अंतर्क्रिया की जटिलता और गहनता धीरे–धीरे बढ़े। पहले चरण में, ये केवल सामग्री और सूचनाओं का संग्रहण हो सकता है। सामग्री संग्रहण को भी चरणों में बांटा जा सकता है, जिसमें सबसे सरल तरीक़ों से उपलब्ध चीज़ों को एकत्रित करना। फिर जब किसी क्षेत्र यात्रा पर जाएं, तो प्रयोगों को वहां जारी रखें और अब वह सामग्री भी जोड़ें, जिसे एकत्रित करने से पहले खोदना, काटना या संसाधित करना पड़े। हम पर्यावरण के विभिन्न कार्यकर्त्ताओं जैसे ग्राम सेवक, डॉक्टर आदि से जानकारी प्राप्त करने की क्षमता विकसित करने को भी इसमें सम्मिलित कर सकते हैं।

पर्यावरण अध्ययन में आवश्यक अभ्यास इकाइयां

शुरुआत में प्राथमिक विद्यालयों में पर्यावरण अध्ययन, बच्चे को पर्यावरण और समुदाय से जानकारी को कैसे इकट्ठा करते हैं और उन पर काम करने के योग्य तीक्ष्ण कौशल और अभ्यास उपलब्ध करवाता है। हमारी समझ के अनुसार, इस स्तर के अधिकांश बच्चों पर हमें वक़्त से पहले ही अमूर्त और काल्पनिक वैश्विक प्रश्नों से जुड़े सही ग़लत करने या नहीं करने योग्य निर्देशों का बोझ नहीं डालना चाहिए। बल्कि, बच्चे को उसके अपने अनुभवों से जोड़ते हुए, इनमें से कुछ बड़े मुद्दों के बारे में बच्चे के दिमाग़ में अप्रत्यक्ष रूप से विचार पैदा करना अधिक उपयोगी हो सकता है। यहां पर यह भी जोड़ा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालय के बाद बच्चे विभिन्न दिशाएं ले सकते हैं। इसीलिए बच्चे की ऊपर वर्णित क्षमताओं को पैना करना और बच्चों को अपनी रुचि के अनुसार पर्यावरण को खोजने और इससे सीखने के लिए स्वतंत्र छोड़ना बेहतर हो सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चे अपनी मर्ज़ी की दिशा में अपने ज्ञान के आधार का निर्माण कर सकते हैं या नहीं भी करें, ऐसा हो सकता है। हमारा सुझाव यह है कि प्राथमिक स्तर पर इस ओर ध्यान केन्द्रित होना चाहिए कि बच्चे को पर्यावरण से और पर्यावरण के साथ सीखने के लिए उत्साहित करें, अन्वेषणात्मक बनाएं और इसके लिए आवश्यक क्षमताएं पैदा करें। हालांकि, इनमें से कुछ विचारों को विद्यालयों में मुख्य पाठ्यक्रम के बाहर काम में लेते हुए देखा जा सकता है। लेकिन इसे मुख्य पाठ्यक्रम के अन्तर्गत लाना महत्त्वपूर्ण है। विद्या भवन की वनशाला और बेसिक स्कूल के कार्यक्रम ऐसे समीक्षक चौकस दिमाग़ विकसित करने में केन्द्रीय भूमिका निभा सकते हैं जो कि समुदाय और प्रकृति से संबंधित मसलों के प्रति संवेदनशील हों।

उच्च प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन–सामाजिक विज्ञान एवं विज्ञान पढ़ाना

पर्यावरण अध्ययन के सिद्धान्त उन धारणाओं को सम्मिलित करते हैं, जो आगे चलकर जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, इतिहास, नृवंश विज्ञान, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल आदि का हिस्सा बनते हैं। जैसे हम ऊँची कक्षाओं में जाते हैं, ये हालांकि आगे और विभाजित होकर और भी विशिष्ट हो जाते हैं।

यह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि हमें यह पहचानना आवश्यक है कि प्राथमिक स्तर पर और बाद के स्तरों पर, हमें इस क्षेत्र में भिन्न तरीक़ों से काम करना होगा। ऐसा कोई तरीक़ा नहीं है कि हम बच्चे से यह अपेक्षा रखें कि वह इन विशिष्ट सिद्धान्तों को विषयों का भाग मानकर उन पर काम करने में सक्षम हो। इस बात से स्पष्ट रूप से यह विचार उभरता है कि हमें इस तथ्य को समझना होगा कि दुनिया के प्रति बच्चे की एक समग्र प्रतिक्रिया है और सामान्यतया वह विशिष्ट है। जिन समस्त विषयों पर हमने ऊपर बात की है, हो सकता है कि पर्यावरण के साथ अंतर्क्रिया के समय ये सारे विषय पहचानने योग्य न हों, लेकिन यह स्पष्ट है कि कोई भी अंतर्क्रिया या स्थिति इनमें से किसी एक विषय को तब तक नहीं देखती, जब तक कि वह विशिष्ट रूप से संरचित या

नियोजित न हो। आसपास की दुनिया के बारे में हमारा अवलोकन ज्ञान के सभी पहलुओं के संदर्भ में है। उदाहरण के तौर पर हमें यह समझने की आवश्यकता है कि सामाजिक विज्ञान पढ़ाते समय हमें बच्चों में कई प्रकार की चिंताएं विकसित करने की आवश्यकता हैं, जिनमें से मुख्य हैं :–

अ. बच्चों को उपभोक्तावाद के ख़तरों के प्रति संवेदनशील कैसे बनाया जाए।

ब. इन्हें संरक्षण के प्रति संवेदनशील कैसे बनाया जाए।

स. बच्चों को यह कैसे महसूस करवाया जाए कि हमारे आसपास प्रकृति, वृक्ष और संसाधन हमें सब कुछ देते हैं और ये हम सबके लिए हैं।

द. उनके द्वारा प्रकृति के दोहन को रोकना क्योंकि यह संभावित रूप से उन्हें ही प्रभावित करेगा।

य. आदिवासियों की संस्कृति की समझ को उजागर करना। क्या आदिवासियों को शहरी लोगों की जीवन शैली और मानदंडों को स्वीकार करना चाहिए।

र. ग्रामीण संसाधन और उनका उपयोग। बच्चों में स्वामित्व, सामूहिक सहभागिता, ज़िम्मेदारी और पहल करने की क्षमता विकसित करना।

ल. इसके बाद समाज और उसके विकास की प्रक्रियाओं में इनके अंतर्संबंधों को समझने से जुड़े सवाल आते हैं। मानक सामाजिक विज्ञान की सामग्री को देखने से यह स्पष्ट नहीं होता कि सामग्री निर्माण में वर्तमान चिंताओं की अभिव्यक्ति की गई है। और मनुष्य के आपसी, प्रकृतिक और भौतिक वातावरण के साथ के संबंधों के साथ–साथ विकास और पर्यावरण के मुद्दों से संबंधित बहस को पूर्ण रूप से सोचा–समझा गया हो। यह सोचना महत्त्वपूर्ण है कि इनमें से कुछ चर्चाओं को किस तरह किस प्रकार अभिव्यक्त किया जाए। हम यहां कुछ ऐसे मसलों के उदाहरण दे रहे हैं, जो सामयिक हैं :–

– विस्तृत परियोजनाएं – ये किसकी मदद करती हैं? इनका नियोजन कैसे होता है?

– अमीर और ग़रीब – उनका जीवन, मूल्य, संघर्ष और योगदान।

– अर्थव्यवस्था – पैसा कम है और ज़्यादा लोगों को काम मिलता है या पैसा अधिक है और कम लोगों को काम मिलता है।

व. भिन्नता (Otherness) – अन्य समाजों, अन्य समुदायों, उनकी जीवन शैली, परम्पराएं बच्चे के अपने अनुभवों के साथ इसकी तुलना को उजागर करना चाहिए और समाज के बहु नमूनों को प्रस्तुत करना चाहिए, ताकि बच्चा भिन्नता का एक अवधारणात्मक आधार बना पाए और तुलना और विषमता के द्वारा अपने सामाजिक वातावरण को बेहतर तरीक़े से समझ पाए। इसमें भौगोलिक भिन्नता, सांस्कृतिक भिन्नता आदि भी सम्मिलित हो सकते हैं।

प. पाठ्यक्रम और सामग्री में पक्षपात

लिंगवादी – एक महिला या एक बच्चा जो काम करता है, उसके बारे में और अधिक जागरूकता।

– गतिविधियां, जिनमें लड़कियां अधिक रुचि लेती हैं, इन गतिविधियों को लड़कों को भी करना चाहिए।

– कक्षा में और घर की गतिविधियों में भी लड़कों और लड़कियों दोनों की भागीदारी।

– लड़कियों के बारे में, उन चीज़ों को अभिव्यक्त करनेवाली कहानियां, जो वे करना चाहती हैं।

– कहानियां उन समाजों के बारे में, जहां महिलाओं का एक अलग स्तर है।

बच्चे का पाठ्यक्रम व्यापकतर व्यवस्थाओं और ढांचों तक विस्तृत हो जाता है। उसकी सक्रियता, निष्क्रियता, इनका हम पर प्रभाव और उनके प्रति हमारी ज़िम्मेदारियां भी इसमें सम्मिलित हैं। हमें यह भी पहचानने की ज़रूरत है कि इन दो तत्त्वों के अन्तर्गत, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान का भी तत्त्व है, जो उनके निर्माण में भी मदद करता है। ये तादात्म्यता चाहे ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक या सांस्कृतिक हो, यह एक जटिल पारस्परिक क्रिया में विद्यमान रहती है

और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती है। ये व्यक्ति की पहचान है और पहचान बनाने में भी मदद करती है। इस बात को रेखांकित करना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि कुछ मायनों में न केवल ये परिस्थितियां वर्तमान स्थिति का कारण बनती हैं, बल्कि बच्चे के विकास के लिए उपलब्ध संभावनाओं, अवसरों और उन्नति की दिशाओं को भी प्रभावित करती हैं। एक बहुलवादी, बहुविषय समाज में ये मसले अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

सारांश यह है कि जब हम विद्यालयों में पर्यावरण के इन तीन पहलुओं के प्रयोग करने की बात करते हैं, तो स्थिति भ्रान्तिपूर्ण हो जाती है, क्योंकि इस बारे में स्पष्टता की कमी है। वास्तव में क्या करना है और इन तीन पहलुओं को विद्यालय कार्यक्रम में किस प्रकार बुनना है। इनके अर्थ एवं समाज में उपलब्ध ज्ञान को बच्चों के साथ बांटने के उद्देश्यों और तरीक़ों के बारे में भी बहुत–सी भ्रांतियां हैं। पर्यावरण को विद्यालय के संदर्भ में देखने का सबसे आम उदाहरण यह विचार है कि सरल एवं स्वाभाविक से जटिल एवं दूरस्थता की ओर बढ़ाना। इस विचार के पक्ष में यह बहस प्रस्तुत की जाती है कि प्रारम्भिक वर्षों में बच्चों को केवल वही सीखना चाहिए, जो उनके आस–पास के सम्पर्क क्षेत्रों में हैं। इस विचार का सुझाव है कि पहले बच्चे को उसके अपने चारों तरफ़ के वातावरण की वस्तुओं, प्राणियों और अंतःक्रियाओं से जोड़ना चाहिए। यह सुझाव इन तथ्यों को नज़रअंदाज़ करता है कि कोई दूरदराज़ की चीज़ भी बच्चे के लिए बहुत क़रीब हो सकती है। क्योंकि वह उसके लिए रुचिकर और प्रासंगिक है। अपनी कल्पना और दिवास्वप्नों के बारे में सोचने की स्वतंत्रता भी बच्चे के लिए काफ़ी उत्साहजनक हो सकती है। हमें यह याद रखना होगा कि बच्चे कहानियों से प्यार करते हैं और उनके लिए दूर–दराज़ के रोचक वर्णन भी कहानी के समान हो सकते हैं। बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने वातावरण और अपने अनुभव से उसकी तुलना करने लगते हैं।

एक बहस इस ज्ञान के आदान–प्रदान के उद्देश्य के संदर्भ में भी है। क्या यह इस रूप में हो जो बच्चे को यह बताए कि उसे क्या करना है या दुनिया की खोज करने में, अन्वेषण करने में, उसकी सहायता करने में इस विश्लेषण के आधार पर आगे का मार्ग प्रशस्त करें।

बुनियादी शिक्षा का नमूना एक ऐसा उदाहरण है जो शिक्षा और पर्यावरण के व्यापक सम्बन्ध को दर्शाता है। बुनियादी शिक्षा या नई तालीम, प्रजातांत्रिक स्वतंत्रता के लिए हुए आंदोलन से उभरकर निकली और यह नागरिकता, ज़िम्मेदारी और प्रजातांत्रिकता भावना के निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा भी थी, जिसकी मांग थी कि हम स्वयं अपने परिरक्षक बनें। ऐसी शिक्षा, जो समुदाय को सशक्त बनाए, समुदाय में व्यवसायों के बीच एक चर्चा को अनुमति दे, शिक्षा के साथ सांस्कृतिक और अन्य सम्बन्धों को जोड़े। इस तालीम में बच्चों से यह अपेक्षा थी कि वे उन व्यवसायों में काम करें जो कि समुदाय विशेष के आर्थिक विकास के लिए मुख्य भूमिका रखते हों और बच्चों के साथ अवधारणात्मक जुड़ाव भी इन्हीं व्यवसायों के साथ अंतःक्रियाओं से प्रकट होना था। इसमें बच्चों के अन्दर पर्यावरण के प्रति चिंता जगाना और इसे अपनी विरासत के रूप में बनाएं रखने की ज़िम्मेदारी की भावना का निर्माण करने पर भी ज़ोर था। सहज विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की कुछ अवधारणाओं के अलावा बुनियादी शिक्षा के अन्तर्गत पर्यावरण की अवधारणा में, ऐसे सामुदायिक नेताओं का विकास करना भी सम्मिलित था, जो अपने समुदाय की आवश्यकताओं को समझें, उनके कार्यों और ज्ञान का सम्मान करें और परिवर्तन, आत्मनिर्भरता और समरसता की तरफ़ बढ़ने में उनके साथ मिलकर काम करें।

हृदय कांत दीवान : विद्या भवन सोसायटी में शैक्षिक सलाहकार हैं।
हिन्दी अनुवाद : जया राठौर, विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केन्द्र।